॥ श्रीः ॥

श्रीमच्छंकराचार्यविरचिता

आनन्दलहरी।

पंडितजाह्नवीदत्तात्मजबुधसंदुनाथकविके-
सरीविरचितभाषाकवित्वसवैयाछन्दोनिबद्धा ।

इयं च

श्रीकृष्णदासात्मजेन गङ्गाविष्णुना
स्वकीये "लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" मुद्रणयंत्रालये
मुद्रयित्वा प्रकाशिता ।

संवत् १९५८, शकाब्दाः १८२३.

कल्याण-मुंबई.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ

भाषापद्यसहिता

आनन्दलहरी।

भवानि स्तोतुं त्वां प्रभवति चतुर्भिर्न वदनैः
प्रजानामीशानस्त्रिपुरमथनः पंचभिरपि ॥
न षड्भिः सेनानीर्दशशतमुखैरप्यहिपति-
स्तदन्येषां केषां कथय कथमस्मिन्नवसरः ॥ १ ॥

सवैया—चारिहुँ आननतें न समर्थ शिवे सब अर्थप्रदे सुविधाता ॥ त्यों यदुनाथ कहै न प्रभू शिव पञ्चहु आननतें सब दाता ॥ है षड आननतें न षडानन शेष अहै न हजारन गाता ॥ लोक त्रिमें स्तुति तो करिवो फिर कौन समर्थ अहै जगमाता ॥ १ ॥

घृतक्षीरद्राक्षामधुमधुरिमा कैरपि पदै-
र्विशिष्यानाख्येयो भवति रसनामात्रविषयः ॥

तथा ते सौंदर्यं परमशिवदृङ्मात्रविषयं
कथंकारं ब्रूमः सकलनिगमागोचरगुणे ॥ २ ॥

घनाक्षरी—दाख घृत दूध अरु मधुको मिठाई होत आपनेहि ऐसो उपमेय नहिं थानै है ॥ बुध यदुनाथ ये पदारथ सुरसरूप ऐसो अहै यहि तो सुरस नाहिं ज्ञानै है ॥ तैसो शिवे रावरी सराही सुन्दराई सोर शम्भुको विलोचनही जानत बखानै है ॥ और कौन जाने विन भाषै ऐसे अम्ब तेरो सब गुणजूह चारों वेदहू न जानै है ॥ २ ॥

मुखे ते तांबूलं नयनयुगुले कज्जलकला
ललाटे काश्मीरं विलसति गले मौक्तिकलता ॥
स्फुरत्कांची शाटी पृथुकटितटे हाटकमयी
भजामस्त्वां गौरीं नगपतिकिशोरीमविरतम्॥३॥

घनाक्षरी—मुखमैं तमूल नैन कज्जलकला त्यों भला भालमैं सिंदूर झलाझल दुति भ्राजकी ॥ बुध यदुनाथ कहै मोतिनके हारवर गरमैं अपार शुचि शोभा सिरताजकी ॥ कञ्चनकी किंकिणी नितम्ब पृथु ऊपर त्यों हेममई

सारी जो अपारी भल भ्राजकी॥ शरण सुमोरी बारबार कर जोरी तोहि भाजियत गौरी जो किशोरी गिरिराजकी ॥३॥

विराजन्मंदारद्रुमकुसुमहारस्तनतटी
नदद्वीणानादश्रवणविलसत्कुंडलगुणा ॥
नतांगी मातंगी रुचिरगतिभंगी भगवती
सती शंभोरंभोरुहचटुलचक्षुर्विजयते ॥ ४ ॥

घनाक्षरी—कुसुम मंदार कल्पद्रुमको सुहार गंध शोभाको अपार कुच पार भ्राजियत है ॥ नचत सुगंड कुल कुंडल उमंड माते सुनि जो अखंड वैन वीन बाजियत है ॥ बुध यदुनाथ नये अंगन सुरंगनते चलत मतंगन सुचाल लाजियत है ॥ शंकर सती प्रत्यक्ष ध्याइयत स्वच्छ जाके अम्बुजते चारुतर अच्छ राजियत है ॥४॥

नवीनार्कभ्राजन्मणिकनकभूषापरिकरै-
र्वृतांगी सारंगी रुचिरनयनांगी कृतशिवा ॥
तडित्पीता पीतांबरललितमंजीरसुभगा
ममाऽपर्णा पूर्णा निरवधिसुखैरस्तु सुमुखी ॥५॥

घनाक्षरी—सोहै अंग अंग हेमभूषण अनेक जामैं बाल रवि ऐसो जडो मणिद्युति गंजको ॥ बुध यदुनाथ कहै नैनद्युति सैन आगे लोचन मृगीके फीके शोभा अरु कंजको ॥ पीत विजुरीलो वर वसन विराजै बाजै घुंघुरु स्वकीनो पति शिवदुख भंजको ॥ शरणा सभैको जाहि चरणा असंख्य वर्ष देहु मोहि ऐसी जू अपरणा सुख-पुंजको ॥ ५ ॥

हिमाद्रेः संभूता सुललितकरैः पल्लवयुता
सुपुष्पा मुक्ताभिर्भ्रमरकलिता चालकभरैः ॥
कृतस्थाणुस्थाना कुचफलनता सूक्तिसरसा
रुजां हंत्री गंत्री विलसति चिदानंदलतिका ॥६॥

घनाक्षरी—हिमिगिरि ऊगी भयो पात कर पल्लव त्यों फूल्यो फूल मोती जो अनेकन लसति है ॥ घुँघुवा री काली जो सोहाति अलकाली सोई भौंरनकी पाली भांति भांति सुवसति है ॥ बुध यदुनाथ कहै कुच फलभार नई बैन रस आछो सब रोगको नसति है ॥ शिव ब्रह्म वृक्ष

ऊपै लतिका अचम्भ एक गति कारि ब्रह्मरूपिणी सुवि-
लसति है ॥ ६ ॥

सपर्णामाकीर्णां कतिपयगुणैः सादरमिह
श्रयंत्यन्ये वल्लीं मम तु मतिरेवं विलसति ॥
अपर्णैका सेव्या जगति सकलैर्यत्परिवृतः
पुराणोऽपि स्थाणुः फलति किल कैवल्यपदवीम् ७

घनाक्षरी—लहलही दलन अनेक गुण बोझी अछे
औरही लतामैं सेवा प्रेमको मलत है ॥ बुध यदुनाथ और
लोगनि त्रिलोकनिमैं मेरे मति मंजुमैं तो ऐसो विलसत
है ॥ शरणा सबैको जो अपरण लता है सोई सेवै योग
जाहिको बडाइये चलत है ॥ बहुत पुराणहू त्रिअच्छ वृ-
क्ष जाके स्वच्छ लिपटे प्रत्यक्ष मुक्तिफलको फलत है॥ ७॥

विधात्री धर्माणां त्वमसि सकलाम्नायजननी
त्वमर्थानां मूलं धनदनमनीयांघ्रिकमले ॥
त्वमादिः कामानां जगति कृतकंदर्पविजये
सतां मुक्तेर्बीजं त्वमसि च परमब्रह्ममहिषी ॥ ८ ॥

घनाक्षरी—धरम विधान तूही करति सदैही अम्ब वेदन सबैको तुम जननी सुजानी हो ॥ तव धनदानी दुओ चरण बखानी सदा प्रणत कुबेर अर्थ मूल सरवानी हो ॥ बुध यदुनाथ कहै कामको निदानी जाते काम हारि मानी सब सुखको निसानी हो ॥ ब्रह्म पट्टरानी मंजु करुणानिधानी भले जीवनके मुक्ति बीज तुमही भवानी हो ॥८॥

प्रभूता भक्तिस्ते यदपि न ममालोलमनस-
स्त्वया तु श्रीमत्या सदयमवलोक्योऽहमधुना ॥
पयोदः पानीयं दिशति मधुरं चातकमुखे
भृशं कैर्वा सेवाविधिभिरनुनीतोऽथ जननि ॥९॥

घनाक्षरी—यदि न हमारे मन चञ्चल सुतारे इक क्षिणहु सुभक्ति भाव भारे भरियत है ॥ बुध यदुनाथ अम्ब तदपि तिहारे हम जोरे कर पायपै तिहारे परियत है ॥ सदय हिया ह्वै शुभ दीठिते विलोकु मेरो वपुष सुयोग्य यों विचारे ररियत है ॥ देत जल ढारे मेघ प्रेमके अपारे ताहि सेवा कौन चातक विचारे करियत है ॥ ९ ॥

कृपापांगालोकं वितर तरसा साधुचरिते
न ते युक्तोपेक्षा मयि शरणदीक्षामुपगते ॥
न चेदिष्टं दद्यादनुपदमहो कल्पलतिका
विशेषः सामान्यैः कथमितरवल्लीपरिकरैः॥१०॥

घनाक्षरी—डारु कृपा कलित कटाक्ष शीघ्र मोपै शिवे परम उदार चारु चरित सदै होजू ॥ बुध यदुनाथ शरणागत शरण देहु देइवो विमुख नाहि तोहिं ना सजै होजू ॥ अरथ सुदेइवो सबैको समरथ शीघ्र मम सुमनोरथ सुदेहि तब मैं होजू ॥ कौन दै है साधरण लतिकानि और जो तौ कल्पलता विशेष ह्वै न तुम देहोजू ॥ १० ॥

महांतं विश्वासं तव चरणपंकेरुहयुगे
निधायान्यत्रैवाश्रितमिह मया दैवतमुमे ॥
तथापि त्वच्चेतो यदि मयि न जायेत सदयं
निरालंबो लंबोदरजननि कं यामि शरणम् ॥११॥

सवैया—तो पद पङ्कज चारु दुओ महकै विशवास सदा शिर नाऊं ॥ ह्वै यदुनाथ किये सब आश शिवे सुर

और नहीं मन ल्याऊं॥होत तऊ न दयायुत तो हिय मोपर-भांति कहो केहि जाऊं ॥ है अवलम्ब विना जगदम्ब अहो अवलम्ब कहो कहँ पाऊं ॥ ११ ॥

अयःस्पर्शे लग्नं सपदि लभते हेमपदवीं
यथा रथ्यापाथः शुचि भवति गंगौघमिलितम् ॥
तथा तत्तत्पापैरतिमलिनमंतर्मम यदि
त्वयि प्रेम्णा सक्तं कथमिव न जायेत विमलम् १२

घनाक्षरी—सुवरण होतो लोह तुरत बखान बाढै पारस पषाण मिलेसो रसन सारेमैं ॥ परम अशुद्ध नीर निरखि घृणा जो लगै शुद्ध होत सोई मिले सुरधुनि धारेमैं ॥ बुध यदुनाथ कहै तैसोई शिवेजू सुनो यदपि मलीन मग्न कलुष अपारेमैं ॥ होयगो सु क्यों न हिय विमल हमारे जोपै प्रेमते लगे है जगजननि तिहारेमैं ॥ १२ ॥

त्वदन्यस्मादिच्छाविषयफललाभेन नियम-
स्त्वमर्थानामिच्छाधिकमपि समर्था वितरणे ॥

इति प्राहुः प्राञ्चः कमलभवनाद्यस्त्वयि मन-
स्त्वदासक्तं नक्तं दिवमुचितमीशानि कुरु तत् १३

सवैया—चाहत हों नतु मैं तजि औरनते पइवो अभि-
लाष कियेजू ॥ हौ समरत्थ मनोरथते अधिकै देइवो महँ
मंजु हियेजू ॥ यों विधि आदि पुराननको सुकह्यो यदुनाथ
दया भरियेजू ॥ हे त्वयि लीन हृदय दिन रैन शिवे जोइ
ऊचित सो करियेजू ॥ १३ ॥

स्फुरन्नानारत्नस्फटिकमयभित्तिप्रतिफल-
त्त्वदाकारं चञ्चच्छशधरविलासौघशिखरम् ॥
मुकुंदब्रह्मेंद्रप्रभृतिपरिवारं विजयते
तवागारं रम्यं त्रिभुवनमहाराजगृहिणि ॥ १४ ॥

सवैया—देह जडो मणि रत्न विभूषण संयुत भीति
सुभ्राजि रह्यो है ॥ शोभित शीश पियूष मयूष सोई शुचि
शीखर साजि रह्यो है ॥ विष्णु विरञ्चि शचीपति आदिक
यों परिवार सुछाजि रह्यो है ॥ हे त्रिहु लोक महाप्रभु
सुन्दरि तो गृह रम्य विराजि रह्यो है ॥ १४ ॥

निवासः कैलासे विधिशतमखाद्याः स्तुतिकराः
कुटुंबं त्रैलोक्यं कृतकरपुटः सिद्धिनिकरः ॥
महेशः प्राणेशस्तदवनिधराधीशतनये
न ते सौभाग्यस्य क्वचिदपि मनागस्ति तुलना १५

घनाक्षरी—जाको है निवास रम्य राश कइलास ऐसो सुस्तुति करैया इन्द्र आदि प्रतियामीको ॥ बुध यदुनाथ जो कुटुम्ब त्रिहुँलोक सोहै जोरे कर सोहैं सिंहजूह तेज-धामीको ॥ जाको प्राण ईश पति शम्भु जगदीश ऐसो जाको है देवैया पद अर्थ अभिरामीको ॥ थोरहू न हिमगिरिराजके तनैया कहूं समता सुरावेर सुभाग सरनामीको ॥ १५ ॥

वृषो वृद्धो यानं विषमशनमाशा निवसनं
श्मशानं क्रीडाभूर्भुजगनिवहो भूषणविधिः ॥
समग्रा सामग्री जगति विदितैव स्मरारिपो-
र्यदेतस्यैश्वर्यं तव जननि सौभाग्यमहिमा॥१६॥

घनाक्षरी—वाहन वृषभ बूढ गूढ विष भोजन जो

वसन दिशान दश सदही मुदानीको ॥ बुध यदुनाथ कहै क्रीडाको श्मसान थान अंग अंग भूषण भुजंग बहुखानीको ॥ परम प्रसिद्ध यों समान तिहुँलोक ताहि सेवै सुर असुर मुनीश ईश मानीको ॥ होइबो त्रिलोक प्रभु शिवको शिवेजू यहु महिमा तिहारे भूरिभाग्य सुबखानीको ॥ १६ ॥

अशेषब्रह्मांडप्रलयविधिनैसर्गिकमतिः
श्मशानेष्वासीनः कृतभसितलेपः पशुपतिः ॥
दधौ कंठे हालाहलमखिलभूगोलकृपया
भवत्याः संगत्या फलमिति च कल्याणि कलये॥

घनाक्षरी–सकल सिरिष्टि तिहुं लोकके विनाशनमें जाहिको स्वभावहीते मति यों नियत है ॥ थिति जो चिताको भूमि भसम सुलेप अंग पशुको अधीश यों सभैही ररियत है ॥ धारे विष भूर कंठ रूप औ स्वभाव ऐसो बुध यदुनाथ सो कृपाते भरियत है ॥ रावरे सुसंगतिको फल यहु शम्भु शिवे मंगल ह्वै मंगल सभैको करियत है॥ १७

त्वदीयं सौंदर्यं निरतिशयमालोक्य परया
भियैवासीद्गंगा जलमयतनुः शैलतनये ॥
तदेतस्यास्ताम्यद्वदनकमलं वीक्ष्य कृपया
प्रतिष्ठामातेने निजशिरसि वासेन गिरिशः॥१८॥

घनाक्षरी—अतिशय रावरी विलोकि सुन्दराई शिवे अजब सुहाई जो महेश्वर दयालपै ॥ बुध यदुनाथ कहै गंग भय भारे भई जलमय अंगसे तरंग ततकालपै ॥ देखिकै दशा यों मुखकमल मलीन ताको तुरत कृपाकै धरे आधो चन्द्र भालपै ॥ परम बडाई है बढाई वास शंभु दैके आपने सराहे शीश जटिल विशालपै ॥ १८ ॥

विशालश्रीखंडद्रवमृगमदाकीर्णघुसृण-
प्रसूनव्यामिश्रं भगवति नवाभ्यंगसलिलम् ॥
समादाय स्रष्टा चलितपदपांसून्निजकरैः
समाधत्ते सृष्टिं विबुधपुरपंकेरुहदृशाम् ॥ १९ ॥

घनाक्षरी—चन्दन च भूरि चारु पुष्प कसतूरी लगो पूरी जेव जावकं सुघेरी पद थानके ॥ बुध यदुनाथ ऐसो

रावरी शरीर आछे उपटे सुपाछे अंब कीने असनानके ॥ ताहि जल लैके तब चरन दबी औ धूरि सान सुरपुरके सराहे वदनानके ॥ भारी भले सहज सुगंधते सवारी सृष्टि विधिने सुकंज दृगवारी ललनानके ॥ १९ ॥

वसंते सानंदे कुसुमितलताभिः परिवृते
स्फुरन्नानापद्मे सरसि कलहंसालिसुभगे ॥
सखीभिः खेलंतीं मलयपवनांदोलितजले
स्मरेद्यस्त्वां तस्य ज्वरजनितपीडाऽपसरति॥२०

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीमच्छंकरा-
चार्यविरचिताऽऽनंदलहरी संपूर्णा ॥

घनाक्षरी–फूले फूले ललित अनेक लतिकाते घिरो जामैं कंज विविध सुगंज छबि बालाके ॥ बुध यदुनाथ त्यों तरंग रंग रंग प्रेरे मलयसमीर भीर भौंर हंस मालाके ॥ मुदित वसन्तमैं सुखेलति सखीन संग ऐसो रम्य नीरमें सरोवर विशालाके ॥ ऐसी तोहि ध्यावै जो धरा धरेश बाला ताहि दूर होते तुरत कलेश ज्वर ज्वालाके ॥ २० ॥

सवैया–हौं बहुवार प्रणाम परे करिहौं शरणागत अंब बखानी ॥ तीनिहुँ लोक विषे युग चारिहु देति सभै पर दीठि दयानी ॥ हौ करती औ किये अपराध क्षमा सबको हमको सुत जानी ॥ मेरो सभै अपराध क्षमा करिये करिये करिये महारानी ॥ २१ ॥

घनाक्षरी–लेति सुधि सबको अपाने आप चुपचाप सबको मनोरथ सदाही वितरति है ॥ सब अपराध क्षमा करति कुव्याधिनको नाशती प्रमोदपुंज हियमैं भरति है ॥ ऐसही प्रकृति परी सुकृत सराहै नित्य बुध यदुनाथ ना विसारे विसरति है ॥ सुनि लखि ऐसी गति रावरी शिवेजू सदा मेरे मन मंजुल उछाह उछरत है ॥ २२ ॥

सवैया–हौं बहुवार पुकारि परे शरणागत आस धरे धरनीपै ॥ हो सबको अभिलाषहिते अधिके देइवो सुभलो परनीपै ॥ हो अवलोकि लखे कितनो यदुनाथ मेरो समता ढरनीपै ॥ मोहूँ विलोकु सुदीठिनते गिरिजा जनि जा जनि जा करनीपै ॥ २३ ॥

हे गिरिजे गिरिवंशध्वजे शिवदार उदार तरे तनि सूना॥ हौं करि जाच न अम्ब उमे दै देहु हमैं नहिं कारहु तूंना ॥ कै विनती शरणागत हों सुत ह्वै यदुनाथ दिनो दिन दूंना ॥ तो पदमें मम प्रेम परे विकसै विकसै निकसै कबहूं ना॥ २४ ॥

को नहिं जानतु मेघनपांति अशुद्ध प्रशुद्ध थली भरि देती ॥ त्यों यदुनाथ सबै जड ज्ञानिन अंगनमैं बहि वायु लगेती ॥ तीनिहुँ लोक विषैं युग चारहु हौ सबको करि माफ अनेती ॥ को नहिं जानत अम्ब तुमै सबकी अभि-लाख सुदेति हो सेंती ॥ २५ ॥

को नहिं जानत सूरजके यह है तमके अतिअत करै-या ॥ है न हुताशन जानत को तृन काठ कपास न आहि दहैया ॥ त्यों यदुनाथ कहै अभिलाष सुदेति महा-दुख पाप कटैया ॥ को नहिं जानत है जननी जननी सुतको अपराध सहैया ॥ २६ ॥

घनाक्षरी—तक तकि हूना तन सुन तन सोर जाको

देत नाकि हूहै जो मनोरथ सुहौरी मैं ॥ करति मुदित करि करुणाकटाक्ष ताको ऐसो शुद्ध सुलभ प्रसिद्ध तीन पौरीमैं ॥ बुध यदुनाथ शरणागत सुनो हो शिवे सो तो एक कारण हमारे बात थोरीमैं ॥ परमपवित्र धौरी अब-लौं बऱ्यौ री ऐसो डारु मति गौरी दाग विरद पिछौरीमैं २७

कवित्त–सुखद सराह्यो शरणागत अह्यो मैं अंब मेरे मन नित्य मोदपाति परमा भरै ॥ है नये अपूरव त्रिलोकी बिच एकी मातु सबकी सधारण जेतेहू तो सदा करै ॥ बुध यदुनाथ कहै बालक समुझि मोपै सदय तिरीछी दीठि रावरी शुभा ढरै ॥ कायकृत वाच जन्म मानस अगाध मेरो सब अपराधसिंधु शीघ्रही क्षमा करै ॥ २८ ॥

संवत उनीस सै पचास(१९५०) मास कीतकमैं कृष्ण पक्ष पञ्चमी गुरौ सुगुणावृन्दकी ॥ मग द्विज स्वस्ती जिला वस्तीके उत्तर ग्राम जीवाके निवासी वांशी दक्षिणव-सिन्दकी ॥ पण्डित प्रसिद्ध जग जाह्नवी प्रसादजूको बुध

यदुनाथ पुत्र अतिसुख कन्दकी ॥ कीनो अनुवाद भाषा सब अभिलाष दाता शंकर अचार्यकृत लहरी अनन्दकी ॥ २९ ॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीशङ्कराचार्य्यविरचिताऽनन्दलहरी पंडितजाह्नवीदत्तात्मजबुधयदुनाथविरचिता भाषा कवित्वसवैयाछन्दोनिबद्धा समाप्ता ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,

"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना, कल्याण—मुंबई.

हिन्दुस्थानी भाषाके ग्रन्थ।

८८०	वाल्मीकीभाषा मूल पुस्तकके प्रत्येक श्लोकसे मिलाकर बनाई गई है और श्लोकार्थजाननेके लिये प्रत्येक सर्गके श्लोकांकभी डाले गये हैं पुस्तक बडी होनेके कारण दो जिल्दोंमें बांधी गई है और दोनोंमें सुन्दर विलायती कपडा और सोनेके अक्षर लगे हुए हैं	२	१०–०	१–८
८८१	योगवासिष्ठ बडा भाषा संपूर्ण	नि	१२–०	१–१२
८८२	वासिष्ठसार ६ प्रकरण जिल्द	क	२–०	०–६
८८३	न्यायप्रकाश परमोत्तम चिद्घनानन्दस्वामीकृत (न्याय और वेदांत)	मुं	७–०	१–०
८८४	शुकसागर अर्थात् भाषा भागवत लाला शालिग्रामजीकृत, इस पुस्तककी भाषा ऐसी सरल मनोरंजक, बनाई गई है कि जिसको छोटे बडे सब भली भांति समझ सक्तेहैं स्थल २ पर दोहा कवित्त, सवैये भजनादिभी डालेगये हैं शंका समाधानभी उचित रीतिसे कियागयाहै और उपयागी दृष्टान्तभी स्थलानुकूल डालेगये हैं अक्षरभी इतना बडा है कि जिसके पढनेमें नेत्रोंको बहुत कम परिश्रम पडता है सुन्दर विलायती कागज चिकना नंबर १	१	१२–०	२–१०

८८५ शुकसागर अर्थात् भाषा भागवत जिल्द कागज रफ् नंबर २ .... २ १०–० २–८

८८६ शुकसागर मध्यम अक्षर ब्रजभाषा.... क ७–० १–४

८८७ तथा–रफ् .... क ६–० १–४

८८८ तुलसीकृतरामायण सटीक लवकुश कांडसहित प्रत्येक दोहा चौपाईका अर्थ पंडित–ज्वाला-प्रसादजी कृत भाषाटीका अतिउत्तम संपूर्ण क्षेपकोंके अर्थ और माहात्म्य तुलसीदासजीका जीवनचारित्र व गूढार्थ व रामवनवासातिथिपत्र कोश और हनुमानजीका चित्र तथा सूर्यवंशके वृक्ष साहित विलायती सोनहरी नाम चित्रित जिल्दकी .... क ८–० १–८

८८९ तथा रफ् (रूखा) कागजकी .... क ७–० १–१०

८९० तुलसीकृत रामायण सटीक ऊपरके सर्व अलंकारों समेत सुन्दर छोटे अक्षरमें २ ५–० ०–१२

८९१ तथा रफ् २ ४–० ०–१२

८९२ तुलसीकृत रामायण बडे टाइपका अतिउत्तम मये (श्लोकार्थ, गूढार्थ, प्रसङ्गार्थ छन्दार्थ व अष्टम लवकुशकाण्ड व इतिहास तुलसी-दासजीका जीवन चरित्र और पञ्चीकरण, रामचन्द्रजीके वनवासका तिथिपत्र व छत्रबं-धादि कठिन शब्दोंका कोष बरवारामायण-सहित ३८०० टिप्पणीके जिसमें संपूर्ण

क्षेपक हैं) ग्लेज .... क ५-० १-०

८९३ और रफू कागजका.... .... क ४-० १-०

८९४ तुलसीकृत रामायण क्षेपकसह मझले टाईपका अतिउत्तम मये (श्लोकार्थ, गूढार्थ, छन्दार्थ, प्रसंगार्थ, अष्टम लवकुशकाण्ड, इतिहास, दृष्टान्त, रामवनवास तिथिपत्र, तुलसीदासका जीवनचरित्र, बरवारामायणमाहात्म्य, हनुमानजीका बडा चित्र व सूर्यवंशका वृक्षसहित ३८०० टिप्पणीके जिसमें संपूर्ण क्षेपक हैं) ग्लेज .... क २-८ ०-८

८९५ और रफू कागजका.... .... क १-१२ ०-६

८९६ तुलसीकृतरामायण बारीक गुटका श्लोकार्थ, प्रसंगार्थ, छन्दार्थ, अष्टम लवकुशकांड, इतिहास रामवनवास, तिथिपत्र, बरवारामायण, माहात्म्यसहित ३८०० टिप्पणीके जिसमें संपूर्ण क्षेपक हैं देशाटन करनेवालेको अत्यन्त उपयोगी थोडेदाम चोखाकाम ग्लेज काजगका चित्रितपुष्ठा .... क १-४ ०-४

८९७ श्रीरामचरित मानस-[गोस्वामि तुलसीदासजीकी हस्तलिखित प्रतिसे चतुर्थावृत्ति केसरियानिवासी कोदौरामजीके द्वारा प्राप्तकर मोटे अक्षरोंमें छापी है].... .... २ ३-० ०-१२

८९८ श्रीरामचरितमानस उत्तम छोटा गुटका [पाकिटबुक] सुनेहरी जिल्दका....	क	०-१०	०-२
८९८ रामायण ८ कांड गुटका	क	१-०	०-३
८९९ तुलसीकृत रामायण सटीकसंजीवनी टीका पं० ज्वालाप्रसादजीकृत बारीक अक्षरोंमे छपी हुई देशाटनीयोंको लाभदायक ग्लेजकागदकी	२	५-०	०-१२
तथा रफ़ कागद....	२	४-०	०-१०
९०० बालउपदेश अर्थात् संत कबीर साहिबका ककहरा कबीरके जिवन चरित्र सहित.	क	०-२	०-॥
९०१ गोपीचंदभरतरी	क	०-४	०-॥
९०२ महाराष्ट्रकुलवंशावली भा०टी०	क	०-३	०-॥
९०३ बीरबर अकबरका उपहास	क	०-८	०-१
९०४ दिल्लगीकीपुडिया प्रथम भाग	क	०-२	०-॥
९०५ ,, ,, द्वितीय भाग	क	०-२	०-॥
९०६ ,, ,, तृतीय भाग	क	०-२	०-॥
९०७ ,, ,, चतुर्थ भाग	क	०-२	०-॥
९०८ ,, ,, पंचम भाग	क	०-२	०-॥
९०९ समस्यापूर्ति अर्थात् बिरबर इत्यादिकके कबि.	क	०-२	०-॥
९१० अहिरावणलीला भाषा पद्योंमें	क	०-४	०-॥
९११ मित्रलाभ दोहा चौपाईमें	क	०-४	१०-०
९१२ शैवमनोरंजन दोनोंभाग	क	०-८	०-१
९१३ विवेकचिंतामणि	क	०-१	०-॥
९१४ आनंदबहार	क	०-१	०-॥

११५ रामविवाहकी पत्रावली .... क ०-२ ०-॥
११६ सांगीत ध्रुवचरित्र .... क ०-४ ०-॥
११७ उपदेशचंद्रिका .... क ०-३ ०-॥
११८ संगीत सुदामलीला .... क ०-२ ०-॥
११९ गणपतिशतक भाषा .... क ०-२ ०-॥
१२० सांगीत प्रल्हादचरित्र. .... क ०-४ ०-॥
१२१ राजपुत्रपूरनमलभक्तका सांगीत .... क १-४ ०-३
१२२ प्रमोदविलास .... क ०-१ ०-॥
१२३ आल्हारामायण सातोकांड .... ना ०-१० ०-२
१२४ जागती कला मैमहसूलसह .... मु १-३ ०-०
१२५ तीर्थमाला (अर्थात् तीर्थदर्पण और पवित्र स्थान निरूपण) .... क ०-५ ०-॥
१२६ दृष्टांत पच्चीसी .... क ०-३ ०-॥
१२७ विजया विनोद तरंगिणी .... क ०-४ ०-॥
१२८ अद्भुत मानलीला .... क ०-२ ०-।
१२९ शीलनिरुपणाध्याय भाषाटीका .... क ०-२ ०-॥
१३० जानकी सतसई इसमें नायक नायिका लक्षण चेट विट विदूषक आदिकोंका लक्षण शृंगारादि सब रसोंका निरूपण स्थायि भावोंका वर्णन दश अवस्थाओंका बयान स्त्रीका नखशिख वर्णन इत्यादि साहित्यके बहुत विषय हैं कुलदोहे ७०० हैं.... क ०-७ ०-१
१३१ सदाचार भाषाटीका .... क ०-२ ०-॥

१३२	देवीचरित्र दोहा चौपाईमें	क	०–२	०–॥
१३३	बैरनबरसात	क	०–२	०–॥
१३४	नामरामायण....	क	०–१	०–॥
१३५	सूरमंजरी इसमें श्रीकृष्णलीलाके पद हैं.	क	०–५	०–॥
१३६	रामानंदीरामरक्षा	डा	०–१	०–॥
१३७	जादूबंगाला भाषामें	क	०–१	०–॥
१३८	श्यामाश्यामविलास	क	०–२	०–॥
१३९	गोविन्दशतक जिसमें भक्तमनानन्ददायक सर्वजगनायक श्रीराधारमणबिहारी माया-मनुजतनुधारी करुणावरुणालयके निकट पूर्वार्द्धमें विनय तथा उत्तरार्द्धमें सुललित लीला वर्णित है	क	०–३	०–॥
१४०	हनुमन्नाटक रामगीत भाषा कविहृदयरामकृत अतिललित सवैया कवितादि छन्दबद्धमें....	२	१–४	०–३
१४१	हनुमान कवच	क	०–२	०–॥
१४२	हनुमत्पूजा	क	०–१	०–॥
१४३	हनुमद्बंदीमोचन स्तोत्र	क	०–१	०–॥
१४४	हनुमानस्तोत्र	क	०–१	०–॥
१४५	माहावीराष्टक	क	०–१	०–॥
१४६	हनुमानबाहुक	क	०–१॥	०–॥
१४७	हनुमानबाहुक भा०टी०	क	०–४	०–॥
१४८	हनुमानपचासा	क	०–२	०–॥
१४९	हनुमानचालीसासंकटमोचन	क	०–१	०–॥

१५०	हनुमानसाठिका (हनुमानजीके ओजवर्द्धक ६० कबित्त)	२	०–२	०–॥
१५१	अलकेशविनय भाषापद्योंमें	क	०–१	०–॥
१५२	हनुमानविनय	ह.प्र.	०–१	०–॥
१५३	हनुमानदूत	क	०–५	०–१
१५४	हनुमानलहरी....	क	०–१	०–॥
१५५	बजरंगबाण	क	०–१	०–॥
१५६	विद्यासदुपदेश प्रसंग १।२।३ (पूर्वार्द्ध)	क	०–१०	०–१
१५७	विद्याविराग भाग १।२	क	०–१॥	०–॥
१५८	घरमासा	क	०–१	०–॥
१५९	भक्तिउपदेशिनी	क	०–१॥	०–॥
१६०	गोपालइकतीसी	क	०–१	०–॥
१६१	वैश्यकुलभूषण (माहेश्वरी कुलशुद्धदर्पण).	क	१–८	०–३
१६२	फागरत्नाकर....	क	०–१	० १
१६३	कान्यकुब्ज चिंतामणि भा०टी०	क	०–८	०–॥
१६४	गौरीस्वयंवर मंजरी	क	०–३	०–॥
१६५	भरतमिलाप	क	०–२	०–॥
१६६	बलई मिश्रका अपूर्व जीवनचरित्र....	क	०–३	०–॥
१६७	शिवाष्टक भाषामें	क	०–१	०–॥
१६८	विनयपत्र	क	०–१	०–॥
१६९	फूलचरित्र तथा चिडिया चरित्र	क	०–१॥	०–॥
१७०	स्तुतिरत्नावली	क	०–१	०–॥
१७१	रामायणकी बाराखडी	क	०–१	०–॥

१७२	नृसिंहपचाशिका भाषा	क	०-२	०-॥
१७३	नृसिंहआख्यान दोहा चौपाईमें श्रीयुत बाबा लछमनदासकृत.	क	०-१०	०-२
१७४	गोदोहनलीला	क	०-२	०-॥
१७५	कजरीरागसंग्रह	क	०-३	०-॥
१७६	अनुरागप्रकाश	क	०-१०	०-२
१७७	श्यामानुरागनाटीका	क	०-४	०-॥
१७८	सुजनप्रकाश भाषा पद्योंमें	क	०-८	०-१
१७९	गीतावली रामायण भाषाटीका	क	२-०	०-४
१८०	शतश्लोकी रामायण सटीक....	क	०-४	०-॥
१८१	रासलीला	क	०-२	०-॥
१८२	गोवर्द्धन लीला	क	०-४	०-॥
१८३	चीरहरण लीला	क	०-२	०-॥
१८४	पनिघट लीला	क	०-२	०-॥
१८५	गोपीनके प्रेमकी उन्मत्त अवस्था लीला.	क	०-३	० ॥
१८६	दधिलीला	क	०-१	०-॥
१८७	समयानिरुपण रामायण भाषाटीका	क	०-३	०-॥
१८८	सदाबहार प्रथमभाग	क	०-२	०-॥
१८९	भजनचालीसी	क	०-२	०-॥
१००	मालीनलीला	क	०-१	०-॥
१९१	उषाचारित्र भाषापद्योंमें	क	०-४	०-॥
१९२	संगीत सुधासागर	क	१-८	०-॥
१९३	हास्यमंजरी तृतीयकालिका	कं	०-५	०-॥

९९४	,, चतुर्थ कलिका	क	०-६	०-॥
९९५	राजीवलोचन क्षेत्रवर्णन	क	०-२	०-॥
९९६	राधाश्यामविनोदकाव्य भाषापद्योंमें	क	०-२	०-॥
९९७	शिवदत्तशिरोमणि भाषाटीका	क	०-४	०-०
९९८	ब्रजविलास मोटा अक्षर	क	५-०	०-०
९९९	तथा रफू	क	४-०	०-०
१०००	ब्रजविलास मध्यम अक्षरका ग्लेज....	क	२-८	०-८
१००१	तथा रफूकागज	क	१-१२	०-६
१००२	भक्तमाल हरिभक्तिप्रकाशिका वार्तिक हिंदी-भाषामें छपके तैयार है .... क		४-०	०-८
१००३	भक्तमाला रामरसिकावली बडी रीवांधिपति महाराज रघुराजसिंहकृत अत्युत्तम छन्दबद्ध जिसमें चारों युगके भक्तोंकी कथा है....	२	४-०	०-१२
१००४	पञ्चदशी भाषा वेदान्त आत्मस्वरूपजीकृत.	मुं	४-०	०-८
१००५	रागरत्नाकर भक्तचिंतामणि रागमालासहित जिसमें ११०२ पद और ५०२ दोहे हैं ६ राग ३६ रागनीमें भजन गानेका अतिउत्तम.	क	२-०	०-४
१००६	भजनामृत इसमें मंगल गौरी, होली, जय-ध्वनि, पदविनय आरती इत्यादि अनेक-प्रकारके भजन हैं साधुनके वास्ते अति उत्तम है	क	१-०	०-२
१००७	नवरत्नरासविलास प्रथम भाग इसमें श्रीकृ-ष्णजीकी रासलीला हैं .... क		०-१२	०-२

१००८ विचारसागर सटीक निश्चलदासजी कृत क २-० ०-४

१००९ भारतसार भाषा .... श्री २-८ ०-४

१०१० जैमिनीयअश्वमेधभाषा परम मनोहर दोहा, चौपाई, छन्दबद्धमें ग्लेज रु. २ रफ् कागज २ १-८ ०-४

१०११ लावणी ब्रह्मज्ञानकी काशीगिरि बनारसीकृत इसमें संपूर्ण लावणी ऐसी भावगंभीरतासे बनाई है कि जिनका अर्थ शृंगार वैराग्य दोनों पक्षोंपर मिलता है .... क १-४ ०-३

१०१२ एकादशस्कन्ध भाषा चतुरदासकृत और नानक विलास .... नि १-० ०-३

१०१३ योगवासिष्ठ गुटका वैराग्यमोक्षप्रकरण वेदांत उत्तम कागज अक्षर बडा.... .... क १-० ०-२

१०१४ तथा रफ् कागजका.... .... क ०-१२ ०-२

१०१५ प्रेमसागर टाईपका बडा ग्लेज कागजका क १-१२ ०-४

१०१६ प्रेमसागर टाईपका बडा रफ् .... क १-४ ०-४

१०१७ अमृतकी बूंद ....द. चौ. ०-१ ०-॥

१०१८ अर्जुनगीता भाषा.... .... क ०-४ ०-॥

१०१९ वसंतफागसंग्रह होली .... क ०-८ ०-१

१०२० गजेन्द्रमोक्ष भाषाटीका .... क ०-४ ०-॥

१०२१ विदुरनीति हिन्दुस्थानी श्रीमहाराज धृतराष्ट्र-को विदुरने उपदेश दिया है यक्षप्रश्नोंके सह क ०-४ ०-॥

१०२२ विदुरप्रजागरराजनीति मारवाडी भाषा मुं ०-८ ०-१

१०२३ चाणक्यनीति भाषाटीका श्लोक दोहासहित क ०-८ ०-२

१०२४ रामगीतावली २ ०-१२ ०-२

१०२५ तुलसीदासकृत दोहावलीरामायण क ०-४ ०-॥
१०२६ स्वरोदयसार चरणदासकृत .... २ ०-२ ०-॥
१०२७ शनिकथा कायस्थकी .... क ०-१॥ ०-॥
१०२८ शनिकथा राघवदासकृत .... क ०-३ ०-॥
१०२९ शनैश्चरजीकी कथा कवि जैतसिंहकृत क ०-३ ०-॥
१०३० रसिकप्रिया कविवरकेशवदासकृतनायकाभेद क ०-१२ ०-२
१०३१ रामचंद्रिका सटीक कविकेशवदासप्रणीत मु २-० ०-४
१०३२ सुन्दरविलास मूल टैपका सुन्दरदासजीकृत क ०-१० ०-२
१०३३ " " टिप्पणी सहित २ १-० ०-२
१०३४ रुक्मिणिमंगल बडा शिवकरण रामरतन काश्री १-० ०-४
१०३५ नासिकेतपुराणभाषा दोहा चौपाईमें स्वर्ग नरकका वर्णन .... क ०-८ ०-१
१०३६ नासिकेत केवलभाषा (वार्तिक) क ०-४ ०-॥
१०३७ नरसीमेहेताको मामेरा बडा चित्रसहित क ०-५ ०-१
१०३८ हनुमानचरित्रभाषा .... मु ०-८ ०-१
१०३९ अमृतधारावेदान्त .... मु ०-१२ ०-२
१०४० सन्तोषसुरतरुवेदान्त .... मु ०-८ ०-१
१०४१ सन्तप्रभाव वेदान्त.... .... मु ०-६ ०-१
१०४२ विचारमालासटीक पञ्चीकरणसहित. क ०-१२ ०-२
१०४३ श्रीकृष्णगीतावली .... क ०-३ ०-॥
१०४४ सूर्यपुराणादि २१५ रत्नका अतिउत्तम कागज और अक्षर विलायती कपडेका जील्द क ०-१० ०-२
१०४५ सूर्यपुराणादि २१५ रत्न रफ़ू .... क ०-६ ०-२

१०४६	विनयपत्रिका तुलसीदासकृत ग्लेज	क	०-८	०-१
१०४७	तथा रफ़ कागज	क	०-६	०-१
१०४८	विनयपत्रिका सटीक ग्लेज	क	१-८	०-४
१०४९	" " रफ़....	क	२-०	०-४
१०५०	ज्ञानमाला	क	०-२	०-॥
१०५१	कवित्तरामायण	क	०-४	०-॥
१०५२	सिंहासनबत्तीसी	क	०-८	०-१॥
१०५३	वेतालपच्चीसी	क	०-६	०-१॥
१०५४	राजनीति पञ्चोपाख्यान	क	०-७	०-१॥
१०५५	सभाविलास	क	०-४	०-॥
१०५६	शुकबहत्तरी	क	०-६	०-१
१०५७	मङ्गलदीपिका अर्थात् शाखोच्चार	क	०-१॥	०-॥
१०५८	दम्पतिवाक्यविलास जिसमें सब देशांतरकी यात्रा और धंदेके सुखको पुरुषने मंडन और स्त्रीने खंडन किया दोहा कबित्तोंमें चित्रित जिल्द सहित....	क	०-१२	०-२
१०५९	ऋतुसंहार और चौरपंचाशिका भाषाटीका	मुं	०-८	०-१
१०६०	रत्नपरीक्षा रत्नोंकी परीक्षाका ग्रन्थ भाषा	२	०-४	०-॥
१०६१	अनुरागरसभाषा नारायणस्वामिकृत पद्योंमें	क	०-३	०-॥
१०६२	प्रेमपुष्पमञ्जरी अच्छे २ भजन व पंजाबी-देशकेभी पद हैं	क	०-२	०-॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
" लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर " छापाखाना, कल्याण-मुंबई.

सूचना.

अपने यन्त्रालयमें वैदिक, वेदान्त, पुराण, धर्मशास्त्र, न्याय, व्याकरण, छन्द, ज्योतिष, काव्य, अलंकार, चम्पू, नाटक, कोश, वैद्यक, सांप्रदायिक, स्तोत्रादि संस्कृतग्रन्थ और हिन्दीभाषाके अनेकानेक ग्रन्थ विक्रयार्थ प्रस्तुत हैं. जिन महाशयोंको सब पुस्तकोंका नाम और भाव तपास करना होय उनको आधआनेका टिकट भेजनेसे सूचीपत्र विनादाम भेजेंगे.

पुस्तकें मिलनेका ठिकाना—

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना,
कल्याण—मुंबई.